Introduction

कॉलेज के प्रथम वर्ष से ही मेरे मस्तिष्क में शोध कार्य के बारे में विविध विचार आते रहे । यही कारण है कि मैंने अध्ययन के साथ-साथ विविध विषयों का मनोयोगपूर्वक अनुशीलन किया । अनुस्नातक होने के पश्चात् मैं तुरन्त ही शोध प्रबन्ध के कार्य में जुट जाना चाहती थी किन्तु बी०एड० कोर्स में प्रवेश मिल जाने से मैंने अपने पाँव पर खड़े रहने के विचार से भी पूरा कर लिया और नौकरी कर ली ।

तत्पश्चात् मैं डॉ० रमणलाल पाठकजी से मिली । वे व्यक्तिगत रूप से मुझे जानते थे । यही कारण है कि उन्होंने मुझे मार्गदर्शन देना स्वीकार किया । श्री पाठकजी जिन्होंने स्वयं गुजरात के हिन्दी साहित्य पर काम किया है उनकी पहले से ही अभिलाषा रही है कि गुजरात के हिन्दी लेखकों पर बहुत ही कम शोध कार्य हुआ है । उनका अभिमत है कि ऐसे विषय पर काम कराया जाय जो मात्र पदवी प्राप्ति हेतु न होकर भविष्य के हिन्दी साहित्य का अध्ययन करनेवाले हिन्दी प्रेमियों के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो । इतना ही नहीं हिन्दी भाषी प्रदेश के साहित्यकार जो गुजरात के हिन्दी साहित्यकारों के विषय में बहुत कम जानते हैं, वे भी उनके साहित्यिक कार्य से सुपरिचित हों ।

मैं गुजरात के हिन्दी साहित्य के बारे में निष्ठापूर्वक कार्य करना चाहती हूँ क्योंकि यह मेरी जन्मभूमि है । यही कारण है कि मैंने गुजरात के आधुनिक हिन्दी कवियों एवं उनकी रचनाओं पर शोध कार्य करने का निश्चय किया और आदरणीय पाठकजी ने मुझे प्रोत्साहित किया ।

अब प्रश्न यह उठता है कि मैंने आधुनिक काल को ही क्यों चुना ? क्योंकि आधुनिक काल ही एक ऐसा काल है जिसमें साहित्य की विविध विधाओं में वैविध्यपूर्ण सर्जन हुआ है जिस पर गुजरात में विशेष रूप से गत डेढ़ सौ वर्षों में विशिष्ट काव्य कृतियों की विपुल रचना हुई है जिनमें गुजराती भाषी एवं अन्य भाषा-भाषी कवियों का विशिष्ट योगदान रहा है । वैविध्य एवं परिमाण की दृष्टि से गुजरात का आधुनिक काव्य किसी भी हिन्दी भाषा भाषी प्रदेश की सर्जना एवं गतिविधियों से कम नहीं है ।

गुजरात के आधुनिक काल में हिन्दी के विकास की गतिविधियाँ अपने चरमोत्कर्ष पर है । इसमें सैकड़ों कवियों एवं कवयित्रियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, कवि सम्मेलनों, मुशायरों आदि के माध्यम से हिन्दी काव्य का प्रचार एवं प्रसार होता रहा है, इन सब कवियों की रचना - प्रक्रिया तथा कविताओं को एक स्थान पर संग्रहित करके उनका मूल्यांकन करने की भावना मेरे मन में रही है । यह कार्य बड़ा कठिन रहा क्योंकि इसे मैं पुस्तकालय या घर के कमरे में बैठकर नहीं करना चाहती थी । इस विषय को

सुचारू रूप से न्याय देने के लिए मुझे अधिक परिश्रम करना पड़ा है । विभिन्न कवियों के साथ सम्पर्क करना, उनकी अनुकूलता के अनुसार उनके साक्षात्कार के लिए उनके घर जाना, उनकी प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनाओं को पाना तथा उनका मूल्यांकन करना यह वास्तव में थका देने वाला कार्य था । फिर भी हिम्मत नहीं हारी और अपने कार्य में जुटी रही । मैंने अनेक कवियों से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उनकी रचनाओं का संकलन एवं रसास्वादन किया । इस कार्य के लिए मुझे अनेक नगरों का प्रवास करना पड़ा तथा एक ही कवि से उनकी अनुकूलता के अनुसार बार-बार मिलना पड़ा और खुशी की बात है कि उनके प्रेमपूर्ण सहयोग से मैं यह कार्य कर पाई हूँ, मेरी सफलता या सामर्थ्य का मूल्यांकन तो विद्वत्जन ही करेंगे ।

मैंने "गुजरात का आधुनिक हिन्दी काव्य" लेकर आधुनिक हिन्दी काव्य को गुजराती भाषाभाषी कवियों की हिन्दी कविता तक ही की सीमा में नहीं बांधा । प्रश्न यह उठता है कि गुजरात प्रदेश के हिन्दी कवियों के अन्तर्गत किन-किन को हम लें ? क्या गुजरात के केवल गुजराती कवियों का ही समावेश प्रस्तुत महानिबंध में या गुजरात में बसे अन्य भाषा भाषियों का काव्य भी इसके अन्तर्गत स्थान पा सकता ? यह भी विचारणीय रहा कि हम वर्तमान गुजरात में बसे कवियों को ही इसके अन्तर्गत स्थान दे या उनको भी जो जन्म से गुजरात में बड़े हुए लेकिन गुजरात प्रदेश के बाहर कार्यरत हैं और विभिन्न रूपों में गुजरात से आज भी जुड़े हुए हैं ? जब हम आधुनिक "गुजरात" शब्द का प्रयोग करते हैं तो हमारे मन एवं मस्तिष्क में असंख्य प्रश्न जन्म लेते हैं । कुछ ऐसे भी कवि हैं जो मूलतः अन्य प्रदेश के हैं और कुछ सालों तक गुजरात में रहे और यहाँ की भूमि पर रचे अपने काव्यों की थाती देकर अन्य प्रदेश में चले गये हैं । कुछ कवियों का जन्म अन्य प्रदेश में होते हुए भी उनका कार्यक्षेत्र गुजरात रहा है ।

संक्षिप्त में मेरा अभिप्राय है कि किसी न किसी रूप से जिनका नाता गुजरात से रहा हो उनको भी मैंने अपने विषय के अन्तर्गत स्थान दिया है जैसे नरेश महेता, रामदरश मिश्र, भानुशंकर महेता आदि । इस प्रकार मैंने अपने विचार-क्षेत्र का दायरा बड़ा विस्तृत रखा है ।

प्रस्तुत महानिबंध की एक विशिष्टता है - प्रश्नावली । मैंने आधुनिक काल के कवियों एवं उनकी पुस्तकों के बारे में गहरा अध्ययन किया । फलतः उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के विषय में उनका व्यक्तिगत अभिप्राय जानना मुझे आवश्यक प्रतीत हुआ । इसलिए मैंने एक प्रश्नावली तैयार की । उसमें 32 प्रश्न दिए । इन प्रश्नों के द्वारा मैं प्रत्येक साहित्यकार की रचनाएँ, उनकी रचना प्रक्रिया, जीवन-दर्शन, साहित्य के प्रति उनका दृष्टिकोण, उनकी

प्रिय कृति तथा उनकी विविध प्रवृत्तियों का सम्यक् रूप से विश्लेषण करके समग्र रूप से उनके काव्य का अध्ययन करना चाहती थी । साथ ही मैं उन्हीं के हस्ताक्षर द्वारा व्यक्त उनके निजी मनोभावों को वाचा देना चाहती थी जिससे ठोस सामग्री को किसी के भी द्वारा नकारा न जा सकें और मेरा प्रबंध मौलिक एवं प्रमाणभूत साबित हो ।

गुजरात में आधुनिक हिन्दी साहित्य का आविर्भाव भारतेन्दु युग के समसामयिक ही हुआ है । अतः पिछले 150 वर्ष (ई.स. 1856 से 1996) के गुजरात के दिवंगत एवं विद्यमान साहित्यकारों की संख्या 300 के करीब होती है । उनमें कविता एवं गुणवत्ता की दृष्टि से करीब 90 ऐसे कवियों को अध्ययन के लिए लिया गया है जिन से गुजरात के आधुनिक काव्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत वैविध्य का बोध हो सके । इन कवियों में 30 के करीब वे हैं जिन्होंने मेरे द्वारा प्रेषित प्रश्नावली का मनोयोगपूर्वक प्रत्युत्तर देने का कष्ट सहर्ष स्वीकार किया । शेष में से कुछ ऐसे हैं जिनको कुछ कारणवशात् प्रश्नावली भेजी नहीं जा सकी और कुछ ऐसे हैं जो गुजरात में हिन्दी कविता के प्रचार प्रसार में अधिकांश रूप से सक्रिय रहे हैं । कुछ ऐसे हैं जिनके विषय में न हिन्दी साहित्य के इतिहास में जानकारी मिलती है न तो गुजराती साहित्य इतिहास में । स्वीकृत सभी कवियों का परिचय दो विभागों में दिया गया है पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध । पूर्वार्द्ध का प्रारम्भ दलपतराम से किया गया है और उत्तरार्द्ध का अम्बाशंकर नागरजी से । पूर्वार्द्ध में प्रायः वे 29 दिवंगत कवि हैं जिन्होंने समाजसुधार, देशप्रेम, भक्ति आदि प्रवृत्तियों एवं व्रज, अवधी, गूजरी, खड़ी बोली आदि भाषारूपों के द्वारा आधुनिक काव्य की सरस्वती को प्रवाहित रखा है । उत्तरार्द्ध में जिन 45 कवियों का परिचय दिया गया है उसके अध्ययन की सुकरता की दृष्टि से तीन विभाग बताये हैं । प्रारंभ में सशक्त हस्ताक्षरों के प्रधान कवि हैं जिनमें से बहुतों ने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दिया है और अपनी विपुल कृतियों के द्वारा आधुनिक काव्य को कथ्यगत एवं शिल्पगत वैविध्य से विशेष उर्वर बनाया है । दूसरे हिस्से में वे समर्थ कवि हैं जिन्होंने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दिया है और अपनी एकाधिक काव्य पंक्तियों द्वारा आधुनिक काव्य धारा को संपुष्ट किया है । अंतिम हिस्से में कुछ ऐसे कवि हैं जिन्होंने प्रश्नावली का उत्तर दिया है किन्तु उनकी काव्य पुस्तकें प्रकाशित न होने पर भी आकाशवाणी, सामयिक पत्रिकाओं एवं मुशायरों के द्वारा आधुनिक हिन्दी काव्य के विविध तेवरों का प्रतिनिधित्व कर उसके प्रचार एवं प्रसार में महती योग दिया है और रचनाकार के रूप में जिनका भावि उज्ज्वल है ।

पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध के सभी कवियों का परिचय काल क्रमिकता एवं ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से देने का प्रयत्न किया गया है जिससे पूरे डेढ़ सौ वर्षों के गुजरात के आधुनिक हिन्दी काव्य की कथ्यगत एवं शिल्पगत उर्वरता का सर्वेक्षण भी हो जाय और इसी महती उद्देश्य के कारण मैंने न तो कबीर या प्रेमचंद जैसे सरल विषय को लेकर न तो समसामयिक केवल दस-बारह कवियों को लेकर संतोषमान लिया है ।

पूर्वार्द्ध में जिन दिवंगत कवियों का परिचय दिया गया है उसका सामग्री संकलन तत् कवि की रचनाओं के अतिरिक्त (1) हिन्दी ना विकास मां गुजरात नो फाड़ो - जनकशंकर दवे, (11) गुजरात के कवियों की हिन्दी साहित्य को देन - डॉ० नटवरलाल अम्बालाल व्यास, (111) गुजरात के संतों की हिन्दी वाणी - डॉ० अम्बाशंकर नागर तथा डॉ० रमणलाल पाठक, (1) राधाकृष्ण काव्यकोश - संपा० भगवति प्रसाद सिंह, ( ) अर्वाचीन् कविता - सुन्दरम् (टि.सं.) ( ) गुजराती साहित्यकोश (आधुनिक-काल) प्रका० गुजराती साहित्य परिषद, अहमदाबाद आदि विविध ग्रंथों से किया गया है ।

हिन्दी साहित्य अकादमी गुजरात राज्य द्वारा प्रकाशित गुजरात के हिन्दी साहित्य-कार (द्वितीय संस्करण) में निर्दिष्ट कवियों से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है । प्रसन्नता की बात है कि प्रायः संपर्कित अधिकांश कवियों ने मुझे अपनी प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनाओं को भेंट देकर अमूल्य सहयोग दिया है । परिणामस्वरूप प्रस्तुत कार्य को अधिकाधिक व्यापक एवं ठोस रूप में सम्पन्न करने का मेरा उत्साह बढ़ता रहा ।

गुजरात से प्रकाशित होनेवाली अगली कविता, चेतना, उत्तरा, भाषासेतु, रैनबसेरा, राष्ट्रवीणा, सुधाबिन्दु जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त पत्रिकाओं में विविध रूप से लिखनेवाले कवियों की रचनाओं को भी यथास्थान उद्धृत किया गया है । इसके उपरांत केन्द्रीय सरकार के बड़े बड़े संस्थान जैसे ओ.एन.जी.सी., आई.पी.सी.एल., बैंक, रिफाइनरी आदि द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में लिखनेवाले गुजरात के कवियों की संख्या बेशुमार है । किन्तु इन कवियों को इस ख्याल से जान-बूझकर छोड़ दिया गया है कि वे अभी लिख रहे हैं, उनको सशक्त हस्ताक्षर के रूप में प्रतिष्ठित होने के लिए थोड़ी देर और प्रतीक्षा करनी है ।

गुजरात के महानगरों और नगरों में ही नहीं अपितु छोटे-बड़े शहरों तक में हिन्दी कवियों की संख्या दिन दुगुनी रात चौगुनी बढ़ रही है । मैं अपने सर्वेक्षण के आधार पर कह सकती हूँ कि अब तो गुजरात के सूरत, बड़ौदा, अहमदाबाद, राजकोट आदि महानगरों व नगरों के कवियों पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य किया जा सकता है । समय की व्यापकता एवं संख्या की अधिकता को देखते हुए मुझे प्रतीत होता है कि गुजरात में आधुनिक हिन्दी काव्य पर विविध आयामों में अभी अनेक शोध ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं । "गुजरात में हिन्दी साहित्यकार" के प्राक्कथ्य में डॉ० अम्बाशंकर नागरजी का दृष्टव्य मंतव्य है - "पश्चिमांचल के इस सर्वाधिक सम्पन्न प्रदेश ने व्यापार व्यवसाय एवं उद्योग धंधा एवं सरकारी गैरसरकारी नौकरियों के लिए भारत के सभी प्रदेश के लोगों को आकर्षित किया है, जिनमें हिन्दी भाषियों की संख्या सर्वाधिक है । यहाँ के औद्योगिक प्रतिष्ठानों, निगमों, बैंकों, स्कूल-कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में बाहर से आकर बसे हिन्दी भाषा-भाषी पर्याप्त संख्या में है । इसमें से कितने ही लोग साहित्य में भी रूचि रखते हैं और हिन्दी में कविता, कहानी, उपन्यास आदि लिखते हैं ।" अर्थात् गुजरात में हिन्दी साहित्य के विकास में इन सबका विपुल सहयोग रहा है ।

<u>अध्याय व्यवस्था :</u>

प्रथम अध्याय में गुजरात में हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास के सन्दर्भ में गुजरात शब्द की व्युत्पत्ति, व्याख्या, भौगोलिक सीमा एवं परिस्थितियाँ, ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण देकर इन सब के परिप्रेक्ष्य में गुजरात में हिन्दी साहित्य के उद्भव एवं विकास का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में आधुनिकता की परिभाषा एवं आधुनिक काव्य की पृष्ठभूमि तथा काव्यान्दोलन के विषय में विस्तृत चर्चा की गई है । गुजरात में आधुनिक हिन्दी काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियों का भी विशद रूप से परिचय दिया गया है ।

तृतीय अध्याय की आधारभूमि प्रश्नावली है । प्रश्नावली के द्वारा कवियों के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं विचारधारा से विस्तृत परिचय कराने का मेरा प्रयास रहा है । प्रस्तुत प्रकरण में ३० कवि ऐसे हैं जिन्होंने मेरे प्रश्नों का लिखित रूप में प्रत्युत्तर दिया है और शेष कवि ऐसे हैं जिनके बारे में अन्य स्रोतों से आवश्यक जानकारी प्राप्त की है ।

चतुर्थ अध्याय स्वीकृत कवियों की कृतियों की भावगत (कथ्यगत) विशेषताओं से सम्बद्ध है । इसमें विभिन्न कवियों के समाज, राष्ट्र, विश्व, नारी, एकाकीपन, जीवनदर्शन, आध्यात्म सम्बन्धी विचारधारा, प्रकृति, शृंगार, आतंकवाद, औद्योगीकरण, पर्यावरण आदि मुद्दों का सोदाहरण विवेचन किया गया है ।

कलापक्ष नामक पाँचवे अध्याय में आलोच्य कवियों की रचनाओं में उपलब्ध विभिन्न बिम्ब-विधान, प्रतीक-विधान, रस आदि का सोदाहरण विवेचन, विश्लेषण और मूल्यांकन किया गया है ।

छठा अध्याय काव्यरूप के बारे में है । इस प्रकरण में आलोच्य कवियों द्वारा स्वीकृत विभिन्न काव्यरूपों यथा प्रबन्ध, महाकाव्य, आख्यान, खंड काव्य, गजल, हाईकु, सोनेट, लम्बी कविता, छांदस - अछांदस, लघु कविता, मुक्तक आदि आदि का सोदाहरण विवेचन किया गया है ।

सातवें प्रकरण में मैंने दो ऐसे कवियों का साक्षात्कार प्रस्तुत किया है जिनको गुजरात की हिन्दी कविता के उभरते सशक्त हस्ताक्षर कहा जा सकता है और जिनका गुजरात के अधुनातन हिन्दी कविता के रूप - निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है ।

उपसंहार के अन्तर्गत सारे शोध प्रबन्ध के विभिन्न अध्यायों के निष्कर्षों का जिक्र करते हुए गुजरात के आधुनिक हिन्दी काव्य के विकास की भावी संभावनाओं के प्रति संकेत किया है । इसके साथ ही मैंने ये भी बताने का प्रयास किया है कि सारांशतः गुजरात का आधुनिक हिन्दी काव्य सारे भारत का सच्चा और विशेषकर गुजरात की अनेकविद्द गतिविधियों का दर्पण है ।

शोध कार्य के दौरान समय-समय पर प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान करनेवाले पूज्य श्री अम्बाशंकर नागर, पूज्य भगवतशरण अग्रवाल, पूज्य मधुबालती चौकसी तथा माननीय डॉ० किशोर काबरा के प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ । साथ ही उन सभी साहित्यकारों जिन्होंने मेरे शोध-कार्य के सहायता हेतु अपने मूल्यवान काव्य संग्रह बड़ी आत्मीयता एवं प्रेम से भेंट किए उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ तथा पूज्य श्री रमणलाल पाठक के सुन्दर मार्गदर्शन से मैं ये कार्य पूर्ण कर पाई । उसके लिए मैं उनकी हृदय से कृतज्ञ हूँ । मेरी नम्र प्रार्थना है कि आप मेरे इस शोध कार्य के अन्तर्गत जो त्रुटियाँ हो मात्र उस पर ध्यान न देते भविष्य के प्रति आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा प्रदान करें ।

S. K. Chavhan